ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-4* May- 2019
Innovation The Research Concept

वर्तमान समय में शोध आलेख प्रारूप

नैना त्रिवेदी
विद्या भवन,
गो.से.शि.महाविद्यालय,
उदयपुर

किसी भी व्यक्ति को अपने विचार, सोच एवं निर्णयों को संप्रेषित करना होता है क्योंकि व्यक्ति यदि किसी क्षेत्र से जुड़ा होता है तो उसके क्षेत्र से संबंधित समस्याओं के समाधान अथवा निराकरण हेतु उसके स्वयं के विचार होते हैं, जिसे वो समाधान हेतु प्रस्तुत करता है। प्रत्येक व्यक्ति के अपने मौलिक विचार होते हैं तथा उसका स्वयं का दृष्टिकोण समस्या के उद्‌गम तथा समाधान हेतु होता हैं।

सभी क्षेत्रों से जुड़े व्यक्ति अपने क्षेत्रों से जुड़ी समस्या के समाधान हेतु शोध करते हैं तथा समस्या के समाधान प्राप्त करते हैं तथा अन्य लोगों को उस समाधान को संप्रेषित करने हेतु शोध आलेख के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक शोध आलेख–लिखने हेतु कुछ नियमों अथवा बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है–

प्रत्येक व्यक्ति का अपने विचारों/समाधानों को प्रस्तुत करने का अपना तरीका होता है । इस श्रृंखला हेतु लेख निम्न प्रकार के होते हैं – लेख, शोध आलेख, विषय आधारित लेख, अध्ययन आधारित लेख तथा समीक्षात्मक लेख, आदि । सभी आलेख नाम के अनुसार अपनी अलग–अलग विशेषता रखते हैं।

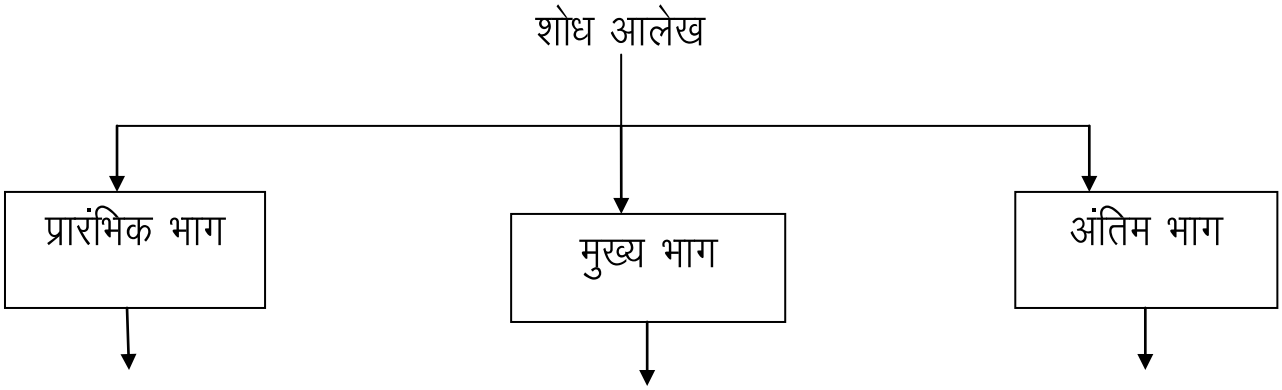

शोध
(i)शीर्षक
(ii) शोध का सारांश

(i) प्रस्तावना
(ii) शोध के उद्देश्य
(iii) न्यादर्श
(iv) शोध विधि
(v) शोध उपकरण
(vi)शोध विश्लेषण एवं विवेचना
(vii) निष्कर्ष
(viii) क्षेत्रीय निहितार्थ

(i) संदर्भ ग्रंथ सूची

शोध आलेख के इन तीनों भागों का आलेख लिखने में खास महत्त्व है तथा उसके प्रत्येक छोटे से छोटे भाग में ध्यान देने की आवश्यकता होती है ताकि शोधार्थी अपने दृष्टिकोण अथवा समाधान को पारदर्शिता से प्रस्तुत कर सकें ।

संपूर्ण आलेख में हर भाग अपना महत्त्व रखता है इसलिए उसे विस्तृत रूप से समझना आवश्यक है। इसका वर्णन निम्नानुसार है –

प्रारंभिक भाग

शोध आलेख के प्रारंभिक भाग को लिखते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

(i) शोध शीर्षक पेपर के मध्य शीर्ष पर लिखा जाना चाहिए।

(ii) शीर्षक को बोल्ड (bold) तथा 16/18 अक्षर का आकार (font size) होना चाहिए।

(iii) इसके पश्चात् मध्य में एक तरफ लेखक का नाम, पद लिखा जाना चाहिए। यदि आलेख एक से ज्यादा लेखकों द्वारा लिखा जा रहा है तो प्रथम सीनियर लेखक का नाम उसके पश्चात् द्वितीय लेखक का नाम आता है।

(iv) यदि आलेख (paper) किसी कार्यशाला , सेमीनार, संगोष्ठी में प्रस्तुत करने हेतु लिखा गया है तो उसे नाम व पद के नीचे लिखा जाना चाहिए।

(v) यदि आलेख प्रकाशित करने के उद्देश्य से लिखा गया है तो महीना व वर्ष नीचे की ओर लिखे।

(vi) शोध का सारांश जो लिखा जाना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, अलग पेज पर हो। इसकी लंबाई 15 से 20 लाईनों में अथवा शब्द सीमा 150 से 200 हो।

(vii) शोध सारांश में प्रस्तावना, शोध विधि से संबंधित मुख्य बिन्दु, शोध निष्कर्ष एवं शोध निहितार्थ शामिल होना चाहिए।

(viii) शोध सारांश में अक्षरों का आकार परिवर्तन किया जा सकता है जिससे वो मुख्य रूप से आकर्षित (Highlight) हो सके।

(ix) सामान्यतः शोध सारांश (ABSTRACT) किसी भी आलेख का सार (Gist) होता है।

मुख्य भाग

प्रस्तावना (Introduction /Background)

प्रस्तावना लिखते समय निम्न बातों अथवा बिन्दुओं का समावेश किया जाना चाहिए–

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य से संबंधित भाग जो आलेख से संबंधित हो।

2. आलेख से संबंधित पूर्व में हुए शोध
3. शोध हेतु समस्या के चुनाव का औचित्य (Justification)

[शोध चुनाव हेतु इसी समस्या को क्यो लिया गया। पूर्व में हुई शोधो का उल्लेख करते हुए महत्त्व लिखना]

4. पूर्व में हई शोधों का उल्लेख करते हुए अगले पेरेग्राफ में उसका महत्त्व लिखना। जो हमारे शोध शीर्षक को आगे बढ़ाने वाला हो।
5. प्रस्तावना आठ से दस लाईनों में होनी चाहिए।

उद्देश्य **(Objectives)**

a) शोध प्रश्न अथवा शोध उद्देश्य अथवा परिकल्पनाएँ जो आपके शोध से संबंधित हो उसे कथन के रूप में लिखना।

पारिभाषिक शब्दावली **(Operational Definition)**

1. शोध सारांश में उल्लेखित मुख्य शब्दों (Key words) को सही रूप से समझाने हेतु उनकी परिभाषा लिखनी चाहिए।
2. शोध से संबंधित मुख्य शब्दावली (Terms) की व्याख्या करनी चाहिए ।
3. भविष्य में शोध में उसका प्रयोग हो सके इतनी स्पष्टता से उसका उल्लेख करना चाहिए।
4. 'कोटेशन' इसमें शामिल नहीं किये जाते हैं।

शोध विधि

1. इसमें बहुत सावधानी से शोध का औचित्य (Justification) लिखा जाना चाहिए, जो संक्षिप्त हो।
2. इसके बाद न्यादर्श की विधि एवं प्रविधि का उल्लेख किया जाना चाहिए।
3. आपके द्वारा शोध में जो उपकरण प्रयोग किया गया है तथा वो प्रमाणित (Standardized) है अथवा नहीं, लिखा जाना चाहिए।

4. अंत में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु कौनसी तकनीकी का प्रयोग किया गया है, अथवा सांख्यिकी प्रविधि का उल्लेख करना।

आंकड़ों का विश्लेषण

1. आंकड़ों के विश्लेषण का आधार शोध प्रश्न एवं उद्देश्य होते हैं। जिसके आधार पर शोध के निष्कर्षो की विवेचना (Interpretation) लिखे जाते हैं।
2. शोधकर्त्ता आंकड़ों के अंतिम विश्लेषण को भी प्रस्तुत कर सकता है।
3. गुणात्मक शोध होने पर व्याख्यात्मक रूप से विवेचना लिखी जानी चाहिए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष उद्देश्यों के क्रम से ही लिखे जाने चाहिए। गुणात्मक शोध लेख में वर्तमान से जोड़ते हुए निष्कर्ष लिखे जाने चाहिए।

शोध में निहितार्थ

1. शैक्षिक निहितार्थ का लेख में उल्लेख अवश्य करना चाहिए।
2. प्रयास करना चाहिए कि सभी क्षेत्रों में जहां निष्कर्ष प्रयोग में आ सके लिखा जाना चाहिए।

उपसंहार

(a) इस भाग को लिखने में लेख का सार केन्द्र में होना चाहिए।
(b) भविष्य में शोध के क्षेत्रों पर बात हो
(c) यदि कोई गलती हो तो उसके लिये खेद प्रकट करना।

(स) अंतिम भाग

अंतिम भाग में संदर्भ साहित्य का उल्लेख किय जाना चाहिए, इसे वर्तमान में “APA style” से लिखने हेतु कहा जाता है।

इसे भी संक्षिप्त में लिखा जाना चाहिए तथा तकनीकी त्रुटि ना हो इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।

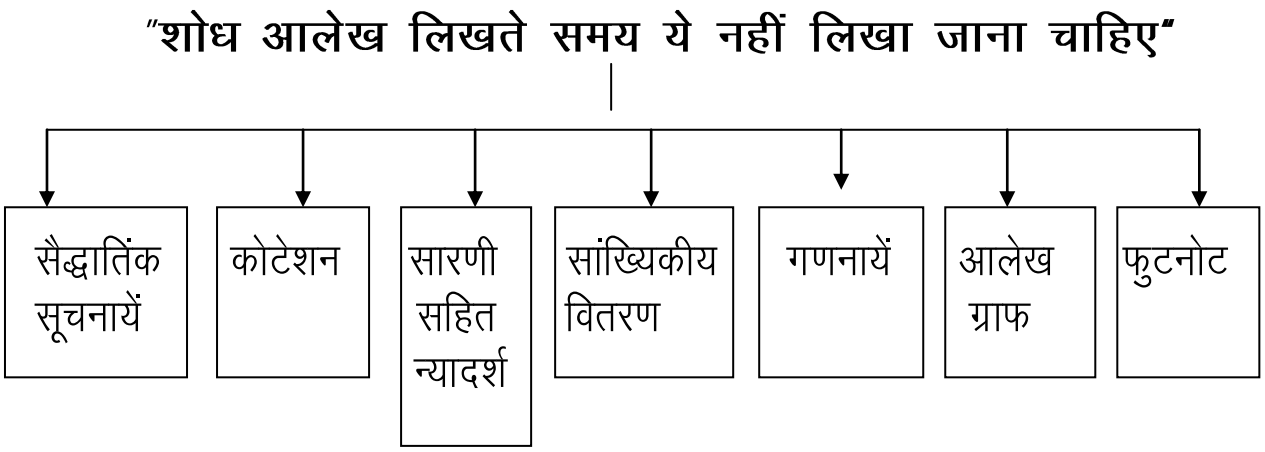

References

1. शर्मा, आर.ए. (2004), "शिक्षा अनुसंधान" सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
2. ढोढियाल एस.एन., फाटक, ए.बी. (1972), "शैक्षिक अनुसंधान" का विधि शास्त्र, "राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर ।
3. शर्मा, आर.ए. (2009) "शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन", इण्टर नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
4. Periodic Research, Multidisciplinary International Research Journal (Vol. 1, Issue IV May 2013)
5. Shrinkhla, A multi Disciplinary International Journal (July 2015)
6. Lecture Series, Refresher Course on Teacher Education.
7. www.researcharticle.com
8. www.google.com